शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ४२ : नई दिल्ली : २०-२६ जनवरी २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमणजी आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि श्रमणी सानंद बाड़मेर संभाग में विचरण करते हुए असाडा पधार गए हैं। यहां पूज्यप्रवर ३१ जनवरी तक प्रवास करेंगे। निकटवर्ती क्षेत्रों से निर्देशित साधु-साध्वियों का पूज्यचरणों में आगमन प्रारंभ हो गया है। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर १ फरवरी को टापरा पधार जाएंगे। यहां मर्यादा महोत्सव की तैयारियों को अन्तिम रूप दिया जा रहा है।

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-६

प्रश्न-४५ :- मैं और मेरा परिवार मेरे गुस्से से बहुत परेशान हैं, किन्तु मैं उस पर नियंत्रण नहीं कर पा रहा हूं, उसे नियंत्रित करने का क्या उपाय है?

उत्तर :- इसके लिए आपको यह लक्ष्य बनाना चाहिए कि मुझे गुस्से पर नियंत्रण करना है। प्रतिदिन सोने से पूर्व और उठने के बाद मन में तीन बार भावना करें--मेरा गुस्सा शान्त हो जाए, मेरा गुस्सा शान्त हो जाए, मेरा गुस्सा शान्त हो जाए।

दूसरा प्रयोग--प्रतिदिन दस मिनट तक दीर्घश्वासप्रेक्षा का अभ्यास करें।

तीसरा प्रयोग--ललाट पर श्वेत चन्द्रमा का ध्यान करें और मन में संकल्प करें--मेरा गुस्सा शान्त हो जाए, मेरा गुस्सा शान्त हो जाए।

चौथा प्रयोग--जब लगे कि यहां गुस्सा आने की संभावना है तो यथासमय यथौचित्य एक बार वह स्थान आप छोड़ दें तो गुस्से का वह अवसर टल सकता है। उस समय कुछ देर मौन करने का अभ्यास भी करें।

प्रश्न-४६ :- क्या हम अपने पूर्वजन्म को देख सकते हैं? यदि हां तो कैसे?

उत्तर :- हमारे यहां प्रेक्षाध्यान में एक शिविर चलता है--पूर्वजन्म अनुभूति शिविर। आप कभी उस शिविर में भाग लें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

प्रश्न-४७ :- मैं वृद्धावस्था में हूं। बच्चे मेरी सेवा भी करते हैं, किन्तु व्यस्तता के कारण वे मुझसे बात नहीं करते हैं, इस कारण मैं बहुत अकेलापन महसूस करता हूं। मुझे क्या करना चाहिए?

उत्तर :- ऐसी स्थिति में आपको स्वाध्याय अथवा मंत्र जप को अपना मित्र बना लेना चाहिए। 'ऊं भिक्षु' अथवा नवकार मंत्र के पद 'णमो सिद्धाणं' का खूब जप करें तो अकेलेपन की अनुभूति कम हो सकती है। दूसरा उपाय है--एकत्व भावना की अनुप्रेक्षा करें। वास्तव में आत्मा अकेली है, इसका अनुचिंतन करें।

प्रश्न-४८ :- मैं जैनधर्म और तेरापंथ का प्रारंभिक ज्ञान करना चाहता हूं, मुझे कौन-सी पुस्तक पढ़नी चाहिए?

उत्तर :- जैनधर्म को जानने की दृष्टि से आप आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित एक पुस्तक पढ़ सकते हैं--'जैन दर्शन : मनन और मीमांसा'। इसे गंभीरता से एक-दो बार पढ़ लें तो जैन धर्म के बारे में आपको काफी ज्ञान मिल सकेगा।

प्रश्न-४९ :- कहते हैं लोकतंत्र अच्छी शासन प्रणाली है, किन्तु आज की राजनीति को देखकर क्या यह नहीं लगता कि राजतंत्र अच्छा है?

उत्तर :- लोकतंत्र को मैं अच्छी शासन प्रणाली मानता हूं, बशर्ते कि लोकतंत्र में जनता को प्रशिक्षित किया जा सके। अंग्रेजी की एक सूक्ति है--'विदआउट ड्यूटी एंड डिसिप्लिन डिटि ऑफ डेमोक्रेसी शेल बी डूम्ड टू डेथ एंड डिस्ट्रक्शन'--प्रजातंत्र का देवता कर्तव्यनिष्ठा और अनुशासन के बिना मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो जाएगा। लोकतंत्र में आप देखिए कि 'बाइ पिपुल, फॉर पिपुल एंड ऑफ पिपुल'--जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन चलता है। भारत में लोकतंत्र है, इसीलिए यहां धर्मनिरपेक्षता की बात संभव हो पा रही है। अगर राजतंत्र होता तो ऐसा संभव होता अथवा नहीं। राजतंत्र में शासक ने जिस धर्म को मान लिया, प्रजा को भी उसी धर्म को मानना पड़ सकता है। यह एक प्रकार से आदमी के चिंतन स्वातंत्र्य और रुचि स्वातंत्र्य के हनन वाली बात हो जाती है। कम से कम लोकतंत्र में सबको अपनी पसन्द चुनने का अधिकार तो है। राजतंत्र में ऐसे सारे अधिकार छिन सकते हैं। डेमोक्रेसी में एक और मुख्य बात यह है कि सत्ता एक प्रकार से जनता के हाथ में होती है। वोट के द्वारा निर्धारित कार्यकाल के लिए किसी को चुनते हैं। अगर वह ठीक से काम नहीं करता तो निर्धारित कार्यकाल के बाद जनता दूसरों को शासन सौंप सकती है और कभी मध्यावधि चुनाव भी हो सकते हैं। लोकतंत्र में शासन चलाने वालों के मन में भय भी रह सकता है कि ठीक काम नहीं करेंगे तो अगली बार जनता हमें वोट क्यों देगी? इसलिए कुल मिलाकर तुलनात्मक दृष्टि से राजतंत्र की अपेक्षा लोकतंत्र कहीं ज्यादा अच्छा प्रतीत हो रहा है।

प्रश्न-५० :- यदि मन में नकारात्मक विचार ज्यादा आते हों तो उन्हें रोकने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर :- नकारात्मक विचार आएं तो उन्हें आप द्रष्टाभाव से देखें और मन ही मन सोचें--ये विचार मेरे नहीं हैं। उस समय मन ही मन पवित्र मंत्र का जप शुरू कर दें। गलत विचारों से डरें नहीं, सम्यक् उपाय से उनका शमन करने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न-५१ :- कहा जाता है जीवन क्षणभंगुर है। ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए कि अगली गति खराब न हो, भले ही मृत्यु कभी भी आए।

उत्तर :- आप चार बातों पर ध्यान दें। पहली बात--ईमानदारी। जीवन में ईमानदारी के प्रति आस्था रहनी चाहिए। थोड़ा कष्ट भले ही झेलना पड़ जाए, परन्तु ईमानदारी को बनाए रखने का प्रयास होना चाहिए।

दूसरी बात--जीवन में अहिंसा की प्रधानता रहे। व्यर्थ लड़ाई-झगड़ा, गुस्सा, कलह--इनसे बचने का प्रयास होना चाहिए। किसी को तकलीफ देने का प्रयास नहीं, हो सके तो किसी का कल्याण करने का प्रयास करना चाहिए।

तीसरी बात--संयम करो। जीवन में किसी भी प्रकार के नशे से बचने का प्रयास हो। जीवन नशामुक्त रहे और खानपान, रहन-सहन, इन्द्रिय प्रयोग में संयम का प्रयास करना चाहिए।

चौथी बात--टाइम मैनेजमेंट या समय प्रबंधन अच्छा होना चाहिए। चौबीस घंटे रोज मिलते हैं तो आप एक-एक घंटे में से दो-दो मिनट का समय भी निकाल लें तो अड़तालीस मिनट का समय आपके पास हो जाएगा। जैनों में सामायिक का जो कालमान है, उतना समय आपके हाथ में आ जाएगा। इस प्रकार अड़तालीस मिनट अथवा जितना समय निकाल सकें, धर्म-ध्यान की साधना में स्वयं को संपृक्त करने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। ये चार बातें आपके जीवन में हैं तो फिर आपको अगली गति की चिंता नहीं करनी चाहिए। अगर पहले से आयुष्य आपका बंध चुका है तो अलग बात, अन्यथा मेरा

विश्वास है कि इस प्रकार की जीवनशैली आपकी है तो अगली गति अच्छी होने की पूरी संभावना है। पहले आयुष्य बंध भी गया तो कोई बात नहीं, अब जो सात्विक जीवन आप जीएंगे, उसका परिणाम आपको अच्छा ही मिलेगा।

प्रश्न-५२ :- ज्ञानशाला के बच्चों को अपने नाम के आगे 'जैन तेरापंथी' लिखने या बोलने की प्रेरणा देना क्या साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देना नहीं है? क्या यह प्रासंगिक है?

उत्तर :- अपने नाम के आगे अपनी जाति अथवा अपने गांव का नाम लगाना, क्या जातिवाद या गांववाद को बढ़ावा देना नहीं है? अगर यह जातिवाद और गांववाद को बढ़ावा देना नहीं है, उपयुक्त है तो 'जैन' या 'तेरापंथी' लगाना गलत संदर्भ में साम्प्रदायिकता कैसे हो सकता है ? मेरी दृष्टि में तो बच्चों को तेरापंथी जैन सिखाना गलत प्रतीत नहीं हो रहा है।

प्रश्न-५३ :- परमाधार्मिक देवता नारकीय जीवों को यातना देते हैं तो क्या उनके पाप कर्म का बंध नहीं होता?

उत्तर :- हां, उनके भी पापकर्म का बंध होता है।

प्रश्न-५४ :- क्या सम्यक्दृष्टि लौकिक पूजा-आराधना करे तो उसके सम्यक्त्व में दोष लगता है?

उत्तर :- लौकिक पूजा को लौकिक मानकर करे तो सम्यक्त्व में कोई अतिक्रमण वाली बात नहीं है।

प्रश्न-५५ :- कहा जाता है कि महाविदेह क्षेत्र में भी तीर्थंकर सदैव रहते हैं तो क्या यह माना जाए कि कोई भी आरा चल रहा हो, वहां तीर्थंकर रहते हैं?

उत्तर :- महाविदेह में आरे की व्यवस्था नहीं है। यह व्यवस्था भरतक्षेत्र और ऐरावत क्षेत्र में होती है। भरतक्षेत्र में कोई भी आरा चल रहा है तो भी महाविदेह क्षेत्र में एक समय में कम से कम बीस और अधिकतम एक सौ साठ तीर्थंकर हो सकते हैं।

प्रश्न-५६ :- क्या एक शुद्ध शाकाहारी व्यक्ति वर्कयुक्त भोजन कर सकता है?

उत्तर :- अगर वर्क में पशुओं के मांस आदि का अंश वास्तव में है, तब तो नहीं करना चाहिए। हमने अभी साधु-साध्वियों के लिए उसे बंद कर रखा है। इस संदर्भ में जो सूचना या जानकारी मिली, उसके आधार पर हमारे यहां वर्क का निषेध है। इस संबंध में यही कहा जा सकता है कि अगर साधु-साध्वियों के लिए वर्क का निषेध है तो श्रावक-श्राविकाओं को भी निषेध रखना चाहिए।

प्रश्न-५७ :- केशलुंचन की परंपरा कब प्रारंभ हुई और वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता क्या है? क्या इसमें बदलाव नहीं किया जा सकता?

उत्तर :- हमारे प्राचीन आगम वाङ्मय में भी केशलोच की बात आती है। भगवान महावीर ने भी केशलोच अपने हाथ से किया। इस आधार पर यह मान लें कि केशलोच प्राचीनकाल से चला आ रहा है। जहां तक प्रासंगिकता की बात है, प्रासंगिकता अगर पहले थी तो आज क्यों नहीं हो सकती? पहले और आज में क्या अन्तर पड़ा है? प्रासंगिकता की कमी वाली बात इसमें नहीं लगती। जहां तक बदलाव की बात है तो हमने इतना बदलाव किया है कि किसी साधु-साध्वी के कोई विशेष कठिनाई हो तो यथौचित्य उसके लिए लोच का अन्य विकल्प भी स्वीकृत किया जा सकता है।

प्रश्न-५८ :- क्या सहिष्णुता से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन होता है?

उत्तर :- सहिष्णुता तो अनेक प्रकार की होती है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के साथ इसका क्या संबंध है? आदमी अपने विवेक से औचित्य के साथ, साहस के साथ कहीं भी बोल सकता है। सहिष्णुता का मतलब यह नहीं कि आदमी मौन धारण करके बैठ जाए और बोलने के समय बोले ही नहीं। विवेक के साथ आदमी बोल भी सकता है।

प्रश्न-५९ :- आत्मा के शुभ कर्मों की प्रवृत्ति से पुण्य का बंध होता है। पुण्योदय से भी मनुष्य आध्यात्मिक

पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक सुखों को प्राप्त करता है। इन सुखों को भोगते हुए पुनः नए कर्मों का बंध होता है। क्या ऐसा संभव नहीं है कि पुण्य का उदय आत्मा को और अधिक पवित्र बनाने हेतु ही हो, न कि अहं की पूर्ति एवं कषाय पैदा कर नए अशुभ कर्मों के बंध का हेतु हो?

उत्तर :- इस पर तो आदमी स्वयं ध्यान दे कि जब पुण्य का उदय हो तो वह अनासक्ति की चेतना के विकास की साधना एवं धर्म की आराधना का प्रयोग करता रहे। जरूरी नहीं है कि पुण्य कोई पाप का निमित्त बने ही बने। वह पाप का निमित्त बन सकता है तो धर्म की साधना का भी निमित्त बन सकता है। इसलिए व्यक्ति स्वयं इसके लिए सचेत रहे। तीर्थंकर के भी कितना पुण्योदय होता है, किन्तु वह पाप का निमित्त नहीं बनता।

प्रश्न-६० :- निराशा की स्थिति से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

उत्तर :- व्यक्ति को चिंतनपूर्वक प्लानिंग के साथ कार्य करना चाहिए। जो प्लानिंग कर ली, उसके लिए सत्पुरुषार्थ भी करना चाहिए। यदि अभीप्सित सफलता न मिले तो आदमी को ध्यान देना चाहिए कि सफलता न मिलने का कारण क्या हो सकता है? प्लानिंग ठीक नहीं थी अथवा पुरुषार्थ पूरा नहीं किया? जहां कमी लगे, उसे ठीक करने का प्रयास करना चाहिए। निराश होकर बैठने से क्या होगा? यों मन को समझाना चाहिए।

प्रश्न-६१ :- संयोग के साथ वियोग निश्चित है, यह सब जानते हैं, फिर भी वियोग के क्षणों में मन उसे स्वीकार नहीं कर पाता। ऐसे क्षणों में क्या करना चाहिए?

उत्तर :- अनित्य अनुप्रेक्षा का अभ्यास करना चाहिए। बार-बार मन को समझाना चाहिए, फिर भी मन नहीं समझे तो 'ओम भिक्षु' जैसे मंत्र का सस्वर पाठ करना चाहिए, फिर जितना संभव हो सके मन को समझा-समझाकर उसको संबुद्ध बनाने का प्रयास करना चाहिए।

प्रश्न-६२ :- जीव द्वारा औदारिक शरीर छोड़ने के बाद औदारिक शरीर के अन्तिम संस्कार हेतु आडम्बरयुक्त वाहन, बैंकुंठी का प्रयोग और मृत शरीर में चंदन, घी, कपूर आदि अनेक महंगे पदार्थों के लेपन का क्या औचित्य है?

उत्तर :- यह कार्य हमसे संबंधित नहीं है। समाज की परंपरा को समाज जाने। **क्रमशः**

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

६ जनवरी। बायतू प्रवास का पांचवां दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने 'आराधना आराध्य की' विषय पर अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जो आराधना के योग्य होता है और जिसके प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव रखा जाता है, वह आराध्य होता है। आराधना के दो प्रकार हैं--पुरुषाराधना और सिद्धान्ताराधना। पुरुषाराधना में किसी व्यक्ति विशेष को आराध्य माना जाता है। कोई भगवान पार्श्व को, कोई भगवान महावीर को, कोई राम को तो कोई भिक्षु स्वामी को अपना आराध्य मानता है, यह पुरुषाराधना है। सिद्धान्ताराधना में किसी सिद्धान्त को आराध्य मानकर उसकी आराधना की जाती है, जैसे--किसी की अहिंसा के प्रति आस्था है तो किसी की दान के प्रति आस्था है। जैनधर्म में रत्नत्रयी की आराधना की जाती है। पुरुषरूपी आराध्य में जो विशेषताएं हैं, उन्हें आत्मसात् करने का प्रयास करना चाहिए। आराधना के साथ अन्तर्मन की भावना का अधिक मूल्य होता है। कर्मबंधन के संदर्भ में मन/भावना का ज्यादा महत्त्व है। आराध्य की आराधना में एकाग्रता अपेक्षित होती है। पवित्र श्रद्धाभाव से पवित्र आराध्य की आराधना श्रेयस्कर होती है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। पूज्यवर के प्रवचन के पश्चात् मुनि विजयकुमारजी एवं साध्वी जिनरेखाजी ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया। आज मध्याह्न में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में सरपंच सम्मेलन का समायोजन हुआ, जिसमें बायतू-बाड़मेर पंचायत समिति के लगभग तीस व्यक्ति संभागी बने। सम्मेलन में जिलाप्रमुख श्रीमती मदन कौर, सवाऊपदमसिंह के सरपंच श्री रतनाराम चौधरी, बायतू चिमनजी सरपंच के पुत्र श्री गोमाराम चौधरी ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किए। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री नेमीचन्द छाजेड़ ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। पूर्वसरपंच श्री मालाराम चौधरी ने आभार ज्ञापित किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में संभागियों को यथासंभव प्रामाणिक रहने और जनता की सेवा में पवित्रता रखने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में मुनि महावीरकुमारजी ने गीत का संगान किया। मुनि उदितकुमारजी का वक्तव्य हुआ। कार्यक्रम का संचालन मुनि रजनीशकुमारजी ने किया।

आज रात्रि में अर्हत वंदना के पश्चात् आचार्यप्रवर स्व.कानराजजी बालड़ के सुपुत्र और मुनि रजनीशकुमारजी के संसारपक्षीय भाई श्री पवन बालड़ के निवास पर पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। संपूर्ण बालड़ परिवार अपने आराध्य के इस महान अनुग्रह को प्राप्त कर आह्लादित था।

कैसी हो जीवनशैली?

१० जनवरी। बायतू प्रवास का छठा और अन्तिम दिन। प्रातःकालीन कार्यक्रम का विषय था--'कैसी हो जीवनशैली?' परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में ध्रुव और अध्रुव--दोनों प्रकार के तत्त्व हैं। शास्त्र में जीवन को अध्रुव कहा गया है। शरीर अध्रुव है, हमेशा रहने वाला नहीं है, जबकि आत्मा शाश्वत है और वह हमेशा रहती है। हमारी जीवनशैली ऐसी हो, जो इस जन्म के बाद अगले जन्म को भी सुखप्रद बना सके। उसके लिए तीन सूत्र ध्यातव्य हैं--

१. अहिंसा प्रधान जीवनशैली :- जीवन में अहिंसा का प्राधान्य या प्रभाव रहना चाहिए। मैत्रीभाव के रूप में अहिंसा रहनी चाहिए। जीवनशैली प्रायः क्रोधमुक्त रहनी चाहिए। गुस्सा जहर के समान होता है। यह मनुष्य की दुर्बलता है। प्रतिकूल स्थिति में तो विशेष रूप से क्रोधमुक्त रहने का प्रयास करना चाहिए। सामुदायिक जीवन में यदि गुस्सा ज्यादा आता है तो पारस्परिक संबंधों में तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। क्षमा धर्म है, उसकी आराधना श्रेयस्कर होती है। व्यक्ति के भीतर अनुकंपा की भावना रहनी चाहिए।

२. संयमप्रधान जीवनशैली :- हमारे जीवन व्यवहार में संयम रहना चाहिए। हम वाणी, आहार, इन्द्रिय, मन आदि का संयम करने का अभ्यास करें।

३. तपःप्रधान जीवनशैली :- जीवन में तपस्या और सत्पुरुषार्थ होना चाहिए, पवित्र सेवा करनी चाहिए। इस प्रकार अहिंसा, संयम और तप से युक्त जीवनशैली वाला व्यक्ति कल्याण की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

आज शुक्ला त्रयोदशी होने से परमपूज्य आचार्यप्रवर ने साधु-साध्वियों की उपस्थिति में हाजरी का वाचन करते हुए आचार और मर्यादा के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की। तत्पश्चात् साधु-साध्वियों ने खड़े होकर सामूहिक रूप से लेखपत्र का उच्चारण किया।

पूज्यवर ने हाजरी वाचन के उपरान्त सुनाम में अनशनपूर्वक दिवंगत शासनश्री साध्वी सोहनांजी (छापर) का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। मुनि रजनीशकुमारजी ने अपनी जन्मभूमि की ओर से बायतू में पूज्यवर के मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना की। आचार्यवर ने उनकी प्रार्थना पर घोषणा करते हुए कहा--'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की अनुकूलता रही

और यदि मैं बाड़मेर जिले में कभी मर्यादा महोत्सव करूंगा तो पहला मर्यादा महोत्सव बायतू में करने का भाव है।'

पूज्यवर के मुखारविन्द से यह घोषणा सुनकर बायतूवासी प्रसन्नता से झूम उठे। आचार्यवर ने प्रसंगवश मुनि रजनीशकुमार द्वारा की गई प्रातराश के उपरान्त कल का विहार करने की प्रार्थना का उल्लेख करते हुए उसे स्वीकृत करने की घोषणा भी की।

बायतू के छहदिवसीय प्रवास में संपूर्ण गांव में अलौकिक वातावरण रहा। स्थानीय निवासियों और प्रवासियों ने इस प्रवास का भरपूर लाभ उठाया। प्रातः, मध्याह्न और रात्रि के समय विषयबद्ध कार्यक्रम चले। पूज्यप्रवर ने सभी जैन घरों तथा अनेक जैनेतर घरों को अपनी चरणरज से पावन किया तथा सभी जैन परिवारों को निकट उपासना का अवसर प्रदान किया। श्रद्धालुओं ने समुपासना के दौरान विविध संकल्प स्वीकार किए। मर्यादा महोत्सव की बक्शीश बायतूवासियों के उत्साह, उल्लास और उमंग को द्विगुणित करने वाली थी।

भव भ्रमण का कारण कषाय

११ जनवरी। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः प्रातराश के उपरान्त बायतू से सात किमी. का विहार कर माधासर पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने कहा--'दो प्रकार की विचारधाराएं हैं--आस्तिक और नास्तिक। आस्तिक विचारधारा पुनर्जन्म और पूर्वजन्म में विश्वास करती है तथा नास्तिक विचारधारा आत्मा, पुनर्जन्म आदि को नहीं मानती। आस्तिक दर्शन आत्मा को शाश्वत मानता है। आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में भ्रमण करती है तथा कर्मों का फल भोगती है। पुनर्जन्म का मूल कारण है कषाय। जो आत्मा कषाय से सर्वथा मुक्त हो जाती है, उसे पुनर्जन्म ग्रहण नहीं करना पड़ता। पुनर्जन्म की परंपरा से बचने के लिए कषायचतुष्टयी को क्षीण करना होगा।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'मनुष्य चिंतन करे कि मेरे भीतर कषाय की क्या स्थिति है। साधक को अपने कषायों को विफल बनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रेक्षाध्यान पद्धति में क्रोध को कृश करने के अनेक उपाय निर्दिष्ट हैं। उन प्रयोगों के द्वारा क्रोध को कम किया जा सकता है। चार कषायों के चार प्रतिपक्षी तत्त्व हैं--उपशम, मृदुता, ऋजुता और संतोष। उपशम के द्वारा क्रोध को, मृदुता के द्वारा मान को, ऋजुता के द्वारा माया को और संतोष के द्वारा लोभ को जीता जा सकता है। अध्यात्म की साधना का सार है कषाय विजय की साधना। पुनर्जन्म की जड़ों को कषायों का सिंचन न मिले तो हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।'

प्रवचन के पश्चात् पूज्यप्रवर ने माधासर विद्यालय के उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

वाणी का दुरुपयोग न हो

१२ जनवरी। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः माधासर से १४ किमी. का विहार कर दूधवा मल्लिनाथ पधारे। यहां आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'मनुष्य अनेक प्रवृत्तियां करता है, उनमें एक है--बोलना। व्यक्ति के जीवन के साथ भाषा जुड़ी हुई है, जो मनुष्यों के पारस्परिक सम्पर्क में सहायक बनती है। भाषा विचार विनिमय का एक सशक्त माध्यम है। दुनिया में अनंतानंत प्राणी हैं। उनमें कितने प्राणियों के पास बोलने का साधन नहीं होता। मनुष्य को भाषायी

शक्ति प्राप्त है। आदमी को उसका दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। जैन वाङ्मय में इस संदर्भ में चार निर्देश दिए गए हैं--बिना पूछे मत बोलो, बीच में मत बोलो, किसी की चुगली मत करो, मायायुक्त झूठ का वर्जन करो। सरलता के साथ अपनी बात को रखने का प्रयास करना चाहिए। हम अपने जीवन में सद्गुणों के विकास का प्रयास करें। यदि यह दुर्लभ मानव जीवन ऐशो-आराम, हिंसा, असंयम आदि में व्यतीत हो रहा है तो यह जीवन का दुरुपयोग है। जीवन में सद्गुणों का विकास करते हुए आत्मोद्धार का प्रयास करना चाहिए।'

सुख-दुःख में समभाव रखना अध्यात्म का सार है

१३ जनवरी। प्रातः दस किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'बागुण्डी' पधारे। इस गांव में पूज्यप्रवर का पदार्पण गत २ दिसम्बर को बाड़मेर की ओर जाते समय हुआ था। आज पूज्यवर का पुनरागमन ग्रामवासियों के अतिरिक्त उल्लास का कारण बना। यहां आपका प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'व्यक्ति के शरीर में अनुकूलता होती है तो प्रतिकूलता भी उत्पन्न हो जाती है। प्रतिकूलता भी अनेक रूपों में हो सकती है। भूख लगी और उस समय भोजन नहीं मिला तो कष्ट हो जाता है। भूख भी एक बड़ा कष्ट है। इसी तरह प्यास लगने पर पानी न मिले तो भी कष्ट हो जाता है। तीव्र पिपासा की स्थिति में पानी के मूल्य का पता चलता है। पानी के उपयोग में विवेक रखें तो कम पानी में भी आवश्यकता की संपूर्ति हो सकती है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'शरीर में बीमारी और दर्द भी हो जाता है। क्षुधा, प्यास, सर्दी-गर्मी आदि किसी भी स्थिति में कष्ट हो सकता है। इन सबको समता से सहन करना महान धर्म है। नरक में होने वाले कष्टों के सामने तो मनुष्य जन्म के कष्ट बहुत स्वल्प हैं। सुख और दुःख दोनों चलते रहते हैं। इन दोनों का एक युग्म है। कभी सुख ज्यादा तो दुःख कम हो जाते हैं। कभी दुःख अधिक हो जाते हैं तो सुख कम हो जाता है। सुख व दुःख की स्थिति में भी हमारी अध्यात्म साधना चलती रहे, मध्यस्थता की साधना चलती रहे। अध्यात्म का सार है हर्ष व विषाद की स्थिति में भी समभाव बना रहे।' कार्यक्रम में मुनि विजयकुमारजी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

निरहंकार में जागता है परमानंद

१४ जनवरी। प्रातः चौदह किमी. का विहार कर आचार्यवर 'खेड़' पधारे। यहां रणछोड़राय खेड़ तीर्थ ट्रस्ट परिसर में स्थित हरिदास धर्मशाला में पूज्यप्रवर का प्रवास हुआ। यहां आयोजित कार्यक्रम में तीर्थ ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री रमेश मंगल ने आचार्यवर का स्वागत किया। मार्गवर्ती सेवा हेतु कोयम्बटूर से समागत पैंसठ सदस्यीय दल ने गीत के माध्यम से कोयम्बटूर के लिए मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना की।

कार्यक्रम के बीच आसीन्द, गंगापुर, पुर, भीम, व जावद में चतुर्मास संपन्न करने वाली शासनश्री साध्वी सरोजकुमारीजी (मुम्बई), साध्वी अमितप्रभाजी (बीदासर), साध्वी अर्हतप्रभाजी (सरदारशहर), साध्वी सम्यकप्रभाजी (सरदारशहर) एवं साध्वी लब्धिप्रभाजी (टिटिलागढ़) आदि ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ आचार्यवर के दर्शन किए। साध्वियों ने गीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति दी। साध्वी सरोजकुमारीजी, साध्वी चन्द्रलेखाजी, साध्वी संघप्रभाजी ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। साध्वी अमितप्रभाजी ने अपनी भावना प्रस्तुत करते हुए सहवर्ती साध्वियों के साथ गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य के भीतर अनेक वृत्तियां विद्यमान

हैं। क्रोध, अहंकार आदि वृत्तियां यदा-कदा उभर जाती हैं और हावी हो जाती हैं। व्यक्ति जब इनके वशीभूत हो जाता है तो वह दूसरों का तिरस्कार करने लगता है। राग-द्वेष के प्राबल्य से व्यक्ति अहंकारपूर्ण आचरण करने लगता है। अहंकार की स्थिति में परमानंद दूर हो जाता है और निरहंकार की स्थिति में वह जाग जाता है। आत्मस्थता के अभ्यस्त व्यक्ति को परम सुख मिलता है, कामार्थी और भोगार्थी को नहीं। पूर्णतया अहंकारमुक्त हो पाना कठिन है, पर विनम्र बनने का प्रयास तो करना चाहिए। अहंकार किस बात का, जबकि शरीर और धन-दौलत नश्वर है। जीवन का एक-एक पल बीतता जा रहा है, यह स्मृति में रहना चाहिए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'व्यक्ति यह चिंतन करे कि मैं आत्मोत्थान के लिए क्या कर रहा हूं? मेरे जीवन में अहिंसा, मैत्री आदि की साधना है या नहीं? मेरे भीतर प्रामाणिकता पुष्ट है या नहीं? मन, वचन व काया का संयम है या नहीं? समय प्रबंधन ठीक है या नहीं? हमारे भीतर में अहंकार का भाव विगलित हो। जीवनशैली स्वस्थ व सुन्दर हो तो हमारा जीवन सार्थक बन सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'बाड़मेर जाते समय आचार्य महाप्रज्ञ खेड़ पधारे थे और अब बाड़मेर से लौटते हुए हम यहां आए हैं। मुनि जयकुमारजी और मुनि मधुरकुमारजी आए हैं। मुनि जयकुमारजी जसोल चतुर्मास में साथ थे। अभी पादरू जाकर आए हैं। अच्छा काम करने वाले संत हैं। साध्वी कल्पलताजी भी पहुंच गई। ये प्रायः गुरुकुलवास में रहनेवाली साध्वी हैं। आसीन्द चतुर्मास संपन्न कर साध्वी सरोजकुमारीजी आई हैं। प्रौढ़ साध्वी हैं और शासनश्री संबोधन से संबोधित हैं। गंगापुर से साध्वी अमितप्रभाजी आई हैं। ये साध्वी जतनकुमारीजी 'कनिष्ठा' के साथ रही हुई हैं। साध्वी अर्हतप्रभाजी पुर से, साध्वी सम्यकप्रभाजी भीम से और साध्वी लब्धिप्रभाजी जावद से यहां आ गई हैं। साध्वी संघप्रभाजी शासनश्री साध्वी नगीनाजी के पास से, साध्वी शुक्लप्रभाजी साध्वी लक्ष्मीकुमारीजी के पास से आई हैं। इस तरह इक्कीस ठाणे यहां आए हैं। साध्वियां भी अच्छा काम करती हैं। सब खूब अच्छी साधना और सेवा करें।

कोयम्बटूर के लोग संघबद्ध रास्ते की सेवा करते हैं। पिछली बार भी आए थे। इन्होंने मर्यादा महोत्सव की प्रार्थना की है। देखते हैं क्या होता है, प्रतीक्षा करें।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

बालोतरा में पुनरागमन

१५ जनवरी। प्रातः खेड़ तीर्थ से लगभग आठ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर बालोतरा पधारे। मार्ग में बालोतरा जल प्रदूषण नियंत्रण केन्द्र के परिसर में बालोतरा के एस.डी.एम. अयूबखान के निवेदन पर आचार्यवर परिसर में पधारे। श्री खान ने आचार्यवर का स्वागत करते हुए जल प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के विषय में अवगति दी। पूर्व गृहराज्य मंत्री श्री अमराराम चौधरी के निवेदन पर आचार्यवर ने चेतन बालाजी की झोंपड़ी बालाजी धाम व घांची समाज के रामदेव मन्दिर में पधार कर मंगलपाठ सुनाया। रास्ते में कई घरों का स्पर्श किया।

खेड़ तीर्थ से विहार करते ही बड़ी संख्या में लोग पूज्यवर के साथ पदयात्रा में सहभागी बनने पहुंच गए। मार्ग में संख्या निरंतर बढ़ती गई और शीघ्र ही उसने जनसैलाब का रूप ले लिया। विभिन्न समाज के लोगों ने स्थान-स्थान पर अहिंसा यात्रा का स्वागत किया। बालोतरा के तेरापंथ भवन में पदार्पण के साथ बड़ी संख्या में पहले से प्रवासित साधु-साध्वियों ने पूज्यप्रवर के पावन दर्शन किए।

संयम समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में बाड़मेर चतुर्मास संपन्न कर पहुंचे शासनश्री मुनि हर्षलालजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त किए। गोगुन्दा चतुर्मास संपन्न कर गुरुचरणों में पहुंचने वाले मुनि दर्शनकुमारजी व उनके सहयोगी मुनि अतुलकुमारजी ने अपनी प्रसन्नता को विचारों व गीत के माध्यम से अभिव्यक्ति

दी। बालोतरा से संबद्ध मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि मधुरकुमारजी, मुनि पुनीतकुमारजी एवं बालमुनि ध्रुवकुमारजी ने अपने विचार रखे। पारमार्थिक शिक्षण संस्था में अध्ययनरत बालोतरा की मुमुक्षु बहनों ने गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'मनुष्य का स्वभाव है भूल करना। ऐसे व्यक्ति संभवतः बहुत कम मिलेंगे जो छठे गुणस्थान तक की छद्मस्थ अवस्था में रहकर भूल न करें। भूल होना कोई बड़ी बात नहीं है महत्त्वपूर्ण बात है भूल का बार-बार आवर्तन न करना। भूल व प्रमाद का हम परिशोधन करें। प्रायश्चित्त व पथदर्शन से परिष्कार होता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जगत में सेवा भावना एवं कर्तव्य भावना का बहुत महत्त्व है। लोकतंत्र में कर्तव्यनिष्ठा व अनुशासन आवश्यक है। जीवन में उत्कर्ष व अपकर्ष आ सकते हैं, किन्तु व्यक्ति अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे। वह अपने कर्तव्य से कभी च्युत न हो।'

बालोतरा आगमन के संदर्भ में पूज्यवर ने कहा--'आज हम एक बार पुनः बालोतरा आए हैं। घूम-फिर कर यहां आ जाते हैं। बालोतरा के अनेकानेक साधु-साध्वियां हैं। यहां के मुनि मधुरकुमारजी जसोल में साथ थे। मुनि अक्षयकुमारजी इनके संसारपक्षीय भतीजे हैं। वह भला साधु है। पुनीत भी यहीं का है, युवावस्था में है। साध्वी शकुंतलाश्रीजी साध्वी सोमलताजी के साथ अभी हरियाणा में हैं। वे बालोतरा से हैं। बालोतरा से साध्वी कलाप्रभाजी, विजयप्रभाजी, रतिप्रभाजी, आदर्शप्रभाजी, सरसप्रभाजी, मृदुयशाजी, प्रसन्नप्रभाजी, संकल्पप्रभाजी, महिमाश्रीजी, मंजुलाश्रीजी व एक समणी संचितप्रज्ञा है। सभी साधु-साध्वियां व समणियां अच्छा काम करें, अच्छी साधना करें। पचपदरा का ध्रुव बालमुनि है। वह अच्छे संस्कार प्राप्त कर अपना विकास करे, अच्छी साधना करे।

शासनश्री मुनि हर्षलालजी स्वामी के आज दर्शन प्राप्त हुए। ये परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के युग के पुराने संत हैं, शान्त, मिलनसार, विनम्र व स्वावलंबी संत हैं। इनके साथ पहले मुनि यशवंतजी थे। उनको जसोल में साथ रखा। अदला-बदली के क्रम में हमने मुनि राजकुमारजी को इनके साथ रखा। वे अच्छी सेवा करने वाले मधुर संगायक हैं। चतुर्मास के बाद मुनि यशवंतजी को पुनः भेज दिया। मुनि दर्शनकुमारजी को प्रायः हर वर्ष बुलाते रहे हैं। शासन के प्रति भक्ति रखने वाले निष्ठाशील संत हैं। दो प्रौढ़/वृद्ध संत मुनि शान्तिप्रियजी को सिरियारी से व मुनि गणभक्तजी को मेवाड़ से लेकर आए हैं। यह अच्छा कार्य किया है। मुनि दर्शनजी के सहवर्ती मुनि अतुलकुमार जगराओं (पंजाब) के संत हैं। वे अच्छा विकास करें। कितने युवा संत सामने आए, बड़ा सात्विक आह्लाद हुआ। मुनि जिनेशजी को हमने इनके गांव (सोहड़ा) व बायतू में याद किया। आज काफी साधु-साध्वियां, जो चतुर्मास में प्रायः साथ थे, मिल गए हैं।'

कार्यक्रम में स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री शान्तिलाल डागा, श्री गौतम श्रीश्रीमाल के वक्तव्य हुए। तेरापंथी महासभा के महामंत्री श्री विनोद चोरड़िया ने 'मोहनीदेवी डागा समाजसेवा पुरस्कार' श्री घीसूलाल बोहरा (चेन्नई) को दिए जाने की घोषणा की। प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा प्रकाशित सन् २०१३ का आकर्षक कैलेण्डर श्री गौरव माण्डोत (जयपुर) ने पूज्यप्रवर को भेंट किया। बालोतरा की श्रीमती मीना अग्रवाल ने आचार्यवर के सिवांची-मालाणी क्षेत्र के प्रवास में छठी अठाई का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम में अच्छी उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। बालोतरा पदार्पण के समय संतों की संख्या ५६ व साध्वियों की संख्या १२७ हो गई।

मध्याह्न में दीक्षार्थी भाई व बहन की भव्य शोभायात्रा निकली। नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई शोभायात्रा पुनः तेरापंथ भवन में पहुंची। आचार्यवर ने मंगलपाठ सुनाया। रात्रि में दीक्षार्थियों का मंगलभावना समारोह रखा गया। इसमें भी उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

आशीर्वाद मिल गया

८ जनवरी। प्रातः सूर्योदय के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी आदि साध्वियों ने पूज्यवर को वंदना की। कुछ क्षण पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यवर से निवेदन किया--'समणी गौरवप्रज्ञाजी सत्ताइस दिन का एकाशन करना चाहती हैं।'

पूज्यप्रवर ने सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा--'समणी गौरवप्रज्ञाजी को हम बहुत बार सेवा के लिए इधर-उधर भेजते रहते हैं।' साध्वीप्रमुखाजी ने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा--'ये सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं। ठिकाणे में भी जहां जरूरत हो, वहां कार्य करने लग जाती हैं। न जाने क्यों इनके मन में हीनभावना बैठ गई है कि मैं अध्ययन नहीं कर पाती हूं।'

पूज्यप्रवर ने उन्हें प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा--'उत्तराध्ययन आदि आगम पढ़ा करो।' साध्वीप्रमुखाजी ने निवेदन किया--'वैसे तो ये अध्ययन करती भी हैं, लेकिन कुंठा मन में बैठ गई है।'

पूज्यवर ने उन्हें वात्सल्यपूरित वाणी में फरमाया--'देखो, अध्ययन जितना संभव हो, करना चाहिए किन्तु वही सब कुछ नहीं है। सेवा भी निर्जरा का एक अच्छा साधन है। एक कहानी सुनो--एक गुरु के पास दो बालक दीक्षित हुए। दोनों से अध्ययन कम होता। उन्होंने गुरु से निवेदन किया--'हमसे इतना अध्ययन नहीं होता, हम क्या करें?'

गुरु ने कहा--'सेवा करो और समता रखो।'

दोनों शिष्यों ने गुरु की वाणी को आशीर्वाद मानकर आत्मसात् किया, फलस्वरूप उसी जन्म में उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया। इसलिए तुम चिन्ता मत करो, खूब पवित्र सेवा करो।' साध्वीप्रमुखाजी ने समणी गौरवप्रज्ञाजी से कहा--'देखो, तुम्हें भी गुरुदेव का आशीर्वाद मिल गया है।'

शासनश्री साध्वी सोहनांजी (छापर) का अनशनपूर्वक स्वर्गवास

गत ७ जनवरी २०१३ को सुनाम (पंजाब) में प्रवासित शासनश्री साध्वी सोहनांजी का अनशनपूर्वक स्वर्गवास हो गया। उनके संदर्भ में उद्गार व्यक्त करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी सोहनांजी छापर के बैद परिवार से संबद्ध थीं। तेरह वर्ष की अल्पायु में उन्होंने अपनी संसारपक्षीया अग्रजा साध्वी गणेशांजी के साथ परमपूज्य गुरुदेव तुलसी से दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा के बारह वर्ष उपरान्त उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया गया। अग्रगण्य के रूप में उन्होंने भारत के सुदूर प्रान्तों तथा नेपाल और भूटान की लगभग इक्यासी हजार किमी. की यात्रा की। अस्वास्थ्य की स्थिति में गत पांच वर्षों से वे सुनाम में स्थिरवास कर रही थीं। गत वर्ष मैंने उन्हें 'शासनश्री' के रूप में संबोधित किया था। दो दिनों की तिविहार संलेखना के पश्चात गत १७ दिसम्बर २०१२ को मेरी स्वीकृति से उन्हें तिविहार अनशन और ३१ दिसम्बर को चौविहार अनशन का प्रत्याख्यान करवाया गया। वि.सं.२०६९, पौष कृष्णा १० तदनुसार ७ जनवरी २०१३ को सायं लगभग ४.०५ मिनट पर उनका अनशन सिद्ध हो गया। साध्वी लज्जावतीजी आदि सहवर्तिनी साध्वियों को सेवा का अच्छा अवसर मिला।'

स्मृति-संबल

- मुसालिया निवासी बेंगलुरु प्रवासी श्रीमती चम्पादेवी पीपाड़ा (धर्मपत्नी-श्री उत्तमचन्दजी पीपाड़ा) का संथारे में स्वर्गवास हो गया। वह एक धर्मनिष्ठ श्राविका थी। लंबे समय से रात्रि भोजन का परित्याग था। नियमित सामायिक किया करती थीं। पीपाड़ा परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- गंगाशहर निवासी फारबिसगंज प्रवासी श्री झंवरलाल भंसाली (सुपुत्र-स्व.करणीदानजी भंसाली) का

निधन हो गया। नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा व स्थानीय सभा के सक्रिय व प्रमुख कार्यकर्ता रहे भंसालीजी के परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। कई बार अस्वस्थता के दौर से गुजरने के बावजूद उनका मनोबल प्रखर था। वे समय के पाबंद, स्पष्टवादी व अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे। कपड़े की दुकान होने से उनकी वस्त्रदान की बलवती भावना रहती थी। उनके सभी पुत्र उच्च शिक्षित, संस्कारी व सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

- पीपाड़ निवासी श्रीमती जतनकंवर लूणावत (धर्मपत्नी-स्व. सोहनलालजी लूणावत) का बयासी वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आचार्य भिक्षु के समय के प्रमुख श्रावक गुमानजी लूणावत की कुलवधू जतनकंवर के मन में संघ व संघपति के प्रति अटूट श्रद्धा थी। साधु-साध्वियों को व्रत निपजाने की बहुत भावना रहती थी। उन्होंने अपने जीवन में तेरह वर्षीतप, ग्यारह आयंबिल मासखमण व अन्य अनेक तपस्याएं कीं। चालीस वर्षों से रात्रि चौविहार था। उनके सुपुत्र संपतराजजी व पांच पुत्रियों में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- उकलाना-गुड़गांव निवासी लाला नेमचन्द जैन (मारबल टी) का देहावसान हो गया। वे सरल, शान्त, उदार व धार्मिक वृत्ति के श्रावक थे। उनमें गुरुनिष्ठा व संघनिष्ठा के गहरे संस्कार थे। उनके सुपुत्र रघुवीर, बलराज, प्रवीण, संजय व दोनों सुपुत्रियों में भी वे ही संस्कार परिलक्षित होते हैं। आर्थिक दृष्टि से संपन्न होने के बावजूद उनकी सादगी व सरलता उल्लेखनीय थी। शासन सेवा में यह परिवार सदैव तत्पर रहता है।
- टिटिलागढ़ (ओडिसा) निवासी छियासी वर्षीय श्रद्धानिष्ठ श्रावक लाला हेमराज जैन का देहावसान हो गया। वे साध्वी पुनीतप्रभाजी (प्रेक्षाश्रीजी) के संसारपक्षीय पिता थे। बहुत श्रद्धाशील एवं सेवाभावी श्रावक थे। उनकी समता भावना व संयम चेतना प्रबल थी। उनके जीवन में त्याग-तपस्या व जप का अद्‌भुत संगम था। उन्हें चार आचार्यों के दर्शन-सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री जैन प्रतिवर्ष लंबे समय तक केन्द्र की उपासना करते थे। उन्होंने बहत्तर वर्ष की अवस्था में मासखमण और कुछ अन्य तपस्याएं कीं। उनके नियमित सामायिक का क्रम रहा। समाज सेवा में भी सदैव तत्पर रहे। परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- बीकानेर निवासी दिल्ली प्रवासी श्री प्रकाश बोथरा का देहान्त हो गया। वे प्रतिवर्ष चार-पांच बार गुरुदर्शन कर लिया करते थे। दिल्ली में प्रवासित साधु-साध्वियों के दर्शनसेवा का लाभ उठाते थे।
- गंगाशहर निवासी गुलाबबाग प्रवासी श्री जतनलाल डागा (सुपुत्र-स्व.सोहनलालजी डागा) का देहावसान हो गया। स्थानीय सक्रिय कार्यकर्ता रहे डागाजी साध्वी कीर्तियशाजी के संसारपक्षीय पिता थे। मुनि धर्मरुचिजी एवं साध्वी निर्वाणश्रीजी इसी परिवार से संबद्ध हैं।
- तारानगर निवासी कोलकाता प्रवासी श्रीमती कलकत्तीदेवी (धर्मपत्नी-स्व. भंवरलालजी बरमेचा) का निधन हो गया। कलकत्तीदेवी के पीहर के चोरड़िया परिवार (टमकोर से) चौबीस साधु-साध्वियां दीक्षित हुए। आचार्यश्री महाप्रज्ञ इसी कुल के महागौरव थे। वे निर्भीक, दृढ़संकल्पी धार्मिक श्राविका थीं। तारानगर पधारने वाले साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा किया करती थी। सामायिक और स्वाध्याय उनका नित्यप्रति का नियम था। उन्होंने पन्द्रह तक की लड़ी तथा आठ मासखमण किए। वर्षों तक एकान्तर किया। प्रतिवर्ष केन्द्र की एक मास तक उपासना करती थी। जमीकन्द का उन्हें त्याग था। उनके सुपुत्र प्रकाश बरमेचा कोलकाता के सक्रिय कार्यकर्ता हैं। इस परिवार से चार उपासक-उपासिकाएं हैं।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 19-1-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

बालोतरा में दीक्षा समारोह संपन्न

१६ जनवरी को परमपूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में दीक्षा समारोह भव्य रूप में समायोजित हुआ। कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में। नवदीक्षित साधु-साध्वी के नाम इस प्रकार हैं--

मुमुक्षु ख्वाहिश	मुनि क्षेमंकरकुमार
मुमुक्षु प्रांजल	साध्वी प्रांजलयशा

जय दीक्षा शताब्दी समारोह : पावन प्रेरणा

तेरापंथ धर्मसंघ के चतुर्थ आचार्य जीतमलजी का दीक्षा शताब्दी समारोह माघ कृष्णा ७/८, तदनुसार ३ फरवरी २०१३ को समायोज्य है। परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में यह समारोह टापरा में समायोजित होगा। परमाराध्य आचार्यवर ने बहिर्विहारी साधु-साध्वियों और श्रावक समाज को भी इस समारोह को आध्यात्मिक रूप में मनाने की पावन प्रेरणा प्रदान की है।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१००/- स्व. नवनीत कच्छारा (सुपुत्र-श्रीमती पुष्पादेवी-गणेशलालजी कच्छारा) की स्मृति में शेषमल, भीमराज, रोशनलाल, नरेन्द्रकुमार, भरतकुमार, कमलेशकुमार, राजेन्द्रकुमार, रमेशकुमार, नितिनकुमार, निर्मलकुमार, हर्षदकुमार, मुकेशकुमार, ललितकुमार, गजेन्द्रकुमार कच्छारा एवं जगजीवनलाल मनोहरलाल चोरड़िया, रीछेड़-कांकरोली-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

५१००/- स्व. श्रीमती सुखीदेवी घोड़ावत (धर्मपत्नी-श्री पतरामजी घोड़ावत, सादुलपुर-जयपुर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र राजेन्द्र, अरुण, उम्मेद, अजय, अशोक घोड़ावत, गुवाहाटी (असम) द्वारा प्रदत्त।

३१२५/- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के बायतू आगमन एवं श्री मांगीलाल-मोहिनीदेवी बुरड़ के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ व मांगीलालजी के सत्तर वर्ष की संपर्ति के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू दिनेश-मधु, तेजस-शोभा, पवन-अर्चना, सुपौत्र आकाश, अपूर्व, सुपौत्री मेघा, प्रेक्षा, जिज्ञासा व तनवी बुरड़, बायतू-जोधपुर-सूरत द्वारा प्रदत्त।

२१००/- परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर द्वारा बीदासर में वृहद् दीक्षा महोत्सव की घोषणा के उपलक्ष्य में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा बीदासर की ओर से अध्यक्ष श्री संपतमलजी बैद द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती जेठीबाई बाफणा (धर्मपत्नी-स्व. सोहनलालजी बाफणा, आसीन्द) की पुण्यस्मृति में रतनलाल, रोशनलाल, लक्ष्मीलाल, महावीरकुमार, गौतमकुमार बाफणा, द्वारा-अमृत प्लाईवुड, पनवेल (महा.) द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता–

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा,
पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ६६८००५५३८१, ६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**